शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक २५ : नई दिल्ली : १५-२१ सितम्बर २०१७

२१५वें भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष्य में
परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत

पूज्य भिक्षु की जय हो।
तेरापंथ संघ संरक्षक स्मृति से मन निर्भय हो।।

आगमदधि का मन्थन कर अभिनव नवनीत निकाला।
दान दया मिथ्यात्वी करणी सिद्धान्तों का प्याला।।
नहीं कदाग्रह सुखद सदाग्रह सत्यशोध सविनय हो।।१।।

राजस्थानी भाषा में सैद्धान्तिक ग्रन्थ विरचना।
पद्यात्मक शैली में मानों जिन वाणी संरचना।
सद्गुण प्रेरक ग्रन्थ-पठन में पाठक मन तन्मय हो।।२।।

शासन में अनुशासन को सिंहासन पर बिठलाया।
एक सुगुरु की आज्ञा को शिष्यों के शीश चढ़ाया।
गुरु इंगित में अपनी इच्छा का समुचित सुविलय हो।।३।।

श्रद्धा भक्ति भावनायुत चरमोत्सव आज मनाएं।
शुद्धाचार विचार भूमि पर शाश्वत सदन बनाएं।
'महाश्रमण' संयम-तप द्वारा तेरापंथ विजय हो।।४।।

राजरहाट कोलकाता में धार्मिक रंग लगा है।
महानगर की जनता में पावन सद्भाव जगा है।
बढ़े अहिंसा यात्रा आगे भारत भाग्योदय हो।।५।।

लय - संयममय जीवन हो.....

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कोलकाता में

डाक्टर्स कान्फ्रेन्स का समायोजन

१ सितम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में आर्त्तध्यान के तीसरे प्रकार 'आतंक (सद्योघाती रोग) के संयोग से संयुक्त होने पर उसके वियोग की चिन्ता में लीन होना' की चर्चा करते हुए व्याधि में मानसिक समाधि रखने की प्रेरणा प्रदान की।

आज पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्त्वावधान में दूसरी 'डॉक्टर्स कॉन्फ्रेन्स' समायोजित हुई। कार्यक्रम में इस संदर्भ में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू और कॉन्फ्रेंस के संयोजक डॉ. निर्मल चोरड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कॉन्फ्रेंस के मुख्य अतिथि तथा इंडियन मेडिकल ऐसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री के.के. अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त किए।

परम पावन आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर कहा--'आज तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्त्वावधान में 'स्वास्थ्य और आध्यात्मिकता : एक दिव्य समन्वय' विषयक 'डाक्टर्स कॉन्फ्रेंस' रखी गई है। शरीर के स्वास्थ्य का महत्त्व है, पर शरीर तो नश्वर है, एक दिन छूटने वाला है। आध्यात्मिक स्वास्थ्य का इससे भी बड़ा महत्त्व है। हम आध्यात्मिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें। शरीर तो कभी स्वस्थ रहे, कभी न भी रहे, परन्तु आत्मा तो स्वस्थ रहे, चित्त प्रसन्न रहे, आत्मा निर्मल रहे। स्थूल शरीर आगे नहीं जाएगा, आत्मा आगे जाएगी या सूक्ष्म और सूक्ष्मतर शरीर साथ जाएंगे। आत्मा अच्छी होगी तो आगे अच्छा रह सकेगा। आत्मा मलिन होगी तो आगे भी कठिनाइयां मिल सकेंगी। इसलिए आदमी आध्यात्मिक स्वास्थ्य की दृष्टि से संवर-निर्जरा के प्रति जागरूक रहे, कार्मण शरीर को कमजोर बनाने का प्रयास करे, अशुभ कर्मों को काटने का प्रयास करे, यह काम्य है। चिकित्सक लोग शरीर के स्तर पर चिकित्सा करने वाले अथवा कुछ मन के स्तर पर चिकित्सा करने वाले हो सकते हैं। शरीर और मन से भी आगे यदि भावात्मक चिकित्सा कर सकें और मरीजों को चित्त समाधि भी पहुंचा सकें, उनका मनोबल भी बढ़ा सकें तो और अच्छा काम हो जाए।'

परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आयोजित एक दिवसीय 'डाक्टर्स कॉन्फ्रेंस' में ६७ चिकित्सक संभागी बने। कान्फ्रेंस के मध्याह्नकालीन सत्र में भी आचार्यप्रवर का पावन सान्निध्य और संक्षिप्त उद्‌बोधन संभागियों को प्राप्त हुआ। विभिन्न सत्रों में मुख्यनियोजिकाजी, टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीशकुमारजी, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के प्रेसिडेंट डॉ. के.के. अग्रवाल, डॉ. कांतिलाल श्यामसुखा, डॉ. कमलेश नाहर, डॉ. निर्मल चोरड़िया, डॉ. विजयसिंह बैद, श्री राकेश खटेड़, श्री विजय चौपड़ा, डॉ. कैलाश जैन, डॉ. विनोद विनायकिया, डॉ. विकास अग्रवाल, डॉ. पल्लवी डागा, डॉ. राहुल जैन, मीता सेठिया, डॉ. पीयूष विनायकिया तथा श्री रणजीत दुगड़ के वक्तव्य हुए। कॉन्फ्रेन्स के दौरान मध्याह्नकालीन सत्र में '२१वीं शताब्दी में आरोग्य संबंधी चुनौतियां' विषय पर पेनल चर्चा रखी गई, जिसमें विशेषज्ञ चिकित्सकों ने हृदयरोग, कैंसर, शुगर, तनाव आदि विषयों पर चर्चा की।

२ सितम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में आर्त्तध्यान के चौथे प्रकार 'प्रीतिकर काम-भोग के संयोग से संयुक्त होने पर उसके वियोग न होने की चिन्ता में लीन होना' का विवेचन किया। आचार्यप्रवर ने अपने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अंतर्गत 'मूर्तिपूजा' के संदर्भ में तेरापंथ की मान्यता का वर्णन किया।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी और आचार्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात् साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

धर्मसंघ के तीन महत्त्वपूर्ण प्रसंगों से जुड़ा है आज का दिन

३ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में आर्त्तध्यान के चार लक्षणों--आक्रन्द करना, शोक करना, आंसू बहाना और विलाप करना की चर्चा की।

आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज भाद्रपद शुक्ला द्वादशी है। यह दिन हमारे धर्मसंघ में अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों से जुड़ा हुआ है। हमारे धर्मसंघ के प्रथम गुरु परम पूज्य आचार्य भिक्षु ने आज के दिन अनशन स्वीकार किया था। वे तेरापंथ के जनक आचार्य थे। उन्होंने आज के दिन मानों महाप्रयाण की तैयारी कर ली और अनशन स्वीकार कर लिया। चेतना अवस्था में अनशन स्वीकार कर लेना और अनशन की स्थिति में देह त्याग देना बहुत अच्छी बात होती है। उनकी साधना की ऊंचाई मेरु जैसी और गहराई सागर जैसी थी, ऐसा कहा गया है। एक विशिष्ट पुरुष, जो हमारे धर्मसंघ के प्रणेता, हमारे आराध्य, हमारे परम श्रद्धेय थे। उन्होंने आज के दिन साहस, मनोबल और आत्मबल का कार्य किया, अनशन स्वीकार कर लिया। मैं श्रद्धा के साथ आचार्य भिक्षु का स्मरण करता हूं। आज उनके अनशन स्वीकरण का दिन है। उनके अनशन से यह प्रेरणा ली जा सकती है कि आदमी का जीवन अनशन की अवस्था में समाप्ति को प्राप्त हो।

आज के साथ जुड़ा हुआ दूसरा प्रसंग है--परम पूज्य डालगणी का महाप्रयाण। डालगणी हमारे धर्मसंघ के सप्तम आचार्य थे। अतीत के दस आचार्यों में वे एकमात्र ऐसे आचार्य थे, जो राजस्थान से बाहर के थे। वे संसारपक्ष में मध्यप्रदेश की उज्जयिनी नगरी से जुड़े हुए थे। वे एक तेजस्वी आचार्य के रूप में प्रख्यात हैं। जयाचार्य के युग में मुनिश्री हीरालालजी स्वामी के द्वारा इन्दौर में उनका दीक्षा संस्कार सम्पन्न हुआ था। जयाचार्य, मघवागणी और माणकगणी के युग में मुनि डालचंदजी के रूप में रहे। वे अपने ढंग के साधु थे। उन्होंने मुनि अवस्था में तीन बार कच्छ की यात्रा की। कच्छ में उनका अच्छा प्रभाव रहा। कच्छीपूज के नाम से वे ख्यात हुए। बाद में माणकगणी का महाप्रयाण हो गया तो धर्मसंघ के प्रतिनिधि के रूप में मुनिश्री कालूजी स्वामी 'रेलमगरा' ने लाडनूं में तेरापंथ के सप्तम आचार्य के रूप में उनके नाम की घोषणा की। उस समय वे लाडनूं में नहीं थे। वे कच्छ से आ रहे थे, तब मार्ग में उन्हें जानकारी मिली कि उन्हें सप्तम आचार्य के रूप में स्वीकार किया गया है। लगभग बारह वर्षों का उनका आचार्यकाल रहा। वे तेजः प्रधान आचार्य थे। अनुशासन करने का उनका अपना तरीका था। गुरुदेव तुलसी ने तो उन पर आख्यान लिखा है 'डालम चरित्र'। डालगणी को जानने के लिए वह बड़ा सुन्दर आख्यान है, ऐसा कहा जा सकता है। उस आख्यान से डालगणी के बारे में जानकारी मिल सकती है। 'तेरापंथ का इतिहास' द्वारा भी उनके बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। आखिर लाडनूं में विक्रम संवत् १९६६ में चतुर्मास के दौरान आज अर्थात् भाद्रपद शुक्ला द्वादशी को उनका महाप्रयाण हो गया। उन्होंने अपने युवाचार्य का मनोनयन प्रकट रूप में न करके लिखित पत्र में गुप्त रूप में किया, उनके महाप्रयाण के बाद उस लिखित पत्र के आधार पर उनके उत्तराधिकारी को सामने लाया गया। परम पूज्य कालूगणी उनके उत्तराधिकारी बने। लाडनूं में अभी जो वृद्ध और अक्षम साध्वियों का जो केन्द्र है, उस स्थान में उनका महाप्रयाण हुआ था। डालगणी का एक महान कार्य यह कि उन्होंने मुनि कालू (छापर) जैसे व्यक्तित्व को भावी आचार्य के रूप

में नियुक्त किया। वह कार्य कर वे मानों अपने संघीय ऋण से उऋण हो गए। डालगणी का आयुष्य बहुत लंबा नहीं था। लगभग सत्तावन वर्ष की अवस्था में वे महाप्रयाण को प्राप्त हो गए। आज उनकी वार्षिक पुण्य तिथि है। उनके महाप्रयाण को करीब एक सौ आठ वर्ष हो गए हैं। मैं परम पूज्य डालगणी का स्मरण करता हूं। उनके रूप में एक तेजस्वी आचार्य धर्मसंघ को प्राप्त हुए और बारह वर्ष तक उन्होंने हमारे धर्मसंघ को सेवा दी। वे हमारे संघ के सरताज थे, नाथ थे। उनकी शैली, उनके ज्ञान और उनके व्याख्यान से हमें कोई सुन्दर अच्छी प्रेरणा मिल सके तो उनका स्मरण और ज्यादा सार्थक हो सकता है।

आज के दिन के साथ जुड़ा हुआ तीसरा प्रसंग है--परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा आज के दिन गंगाशहर में अपने उत्तराधिकारी की घोषणा। गंगाशहर की चौपड़ा स्कूल के विशाल परिसर में उन्होंने अपने युवाचार्य की नियुक्ति की थी, स्पष्ट दायित्व प्रदान किया था। उनका धर्मसंघ के प्रति एक महत्त्वपूर्ण दायित्व था, उन्होंने उस दायित्व को अपनी ओर से बखूबी निभा दिया। इस प्रकार आज का दिन आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा अपने युवाचार्य की घोषणा के साथ भी जुड़ा हुआ है। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का मैं स्मरण करता हूं। वे एक महान, ज्ञानी, शांत, व्यवहार निपुण, शास्त्रज्ञ, प्रवचनकार, साहित्य सर्जक, ध्यानयोगी, प्रेक्षाध्यान को प्रोन्नत करने वाले, जीवन-विज्ञान की बात को आगे बढ़ाने वाले और अहिंसा यात्रा प्रारंभ करने वाले आचार्य थे। मैं उनके प्रति प्रणत हूं। उन्होंने आज के दिन अपना दायित्व अपने शिष्य पर मानों वरदहस्त के साथ रखा था और आचार्य के लिए करणीय एक अति महत्त्वपूर्ण कार्य के दायित्व से मुक्त हो गए। आज का यह भाद्रपद शुक्ला द्वादशी का दिन इन तीन प्रसंगों के कारण हमारे धर्मसंघ से जुड़ा हुआ है।'

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अधिवेशन का समायोजन

परमाराध्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में समायोजित तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के द्विदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का दूसरा दिन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम तेरापंथ समाज की एक बौद्धिक संपदा है। शिक्षित व्यक्ति तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की इकाइयां बनी हुई हैं, ऐसा माना जा सकता है। आदमी के जीवन में बुद्धि, ज्ञान, सूझबूझ का बड़ा महत्त्व होता है। बुद्धिमान आदमी कार्य को सुघड़ता से संपन्न कर सकता है, हालांकि कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी अपने आप में सूझबूझ वाला और अनुभवी हो सकता है, कुशल हो सकता है। जिन्होंने वर्षों तक विद्या का अभ्यास किया हो, वे तो बौद्धिक संपदा से सम्पन्न व्यक्तित्व बन ही सकते हैं। यह संस्था एक सुन्दर उपलब्धि है, मानों बिखरे हुए मोतियों को इकट्ठा कर दिया गया है। बिखरे मोतियों की अपेक्षा उन्हें पिरोकर माला बना दी जाए तो कितना महत्त्वपूर्ण कार्य हो जाता है। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम मानों मोतियों की माला बन गया है। इतने-इतने लोग उसमें जुड़ गए, गुम्फित हो गए हैं। बिखरे हुए फूल के तो कोई पैर लगा दे या उन्हें कुचल दे, किन्तु फूलों का गुलदस्ता या माला बन जाए तो कितना सुन्दर लग सकता है। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम बिखरे हुए फूलों का मानों गुलदस्ता बन गया, माला बन गई है। तेरापंथ से जुड़ा हुआ फोरम है तो मानों धर्म के संस्कार कुछ तो सहजतया ही आ सकते हैं। प्रयास से वे संस्कार और ज्यादा पुष्ट हो सकते हैं।

इस फोरम के पास बौद्धिक संपदा है, जिसमें डॉक्टर भी मिल सकते हैं, वकील भी मिल सकते हैं, न्यायाधीश भी मिल सकते हैं। विभिन्न क्षेत्रों के शिक्षित लोग इस एक फोरम से प्राप्त किए जा सकते हैं। जहां जैसी अपेक्षा हो, फोरम में खोजा जा सकता है। एक सुन्दर मंच है, फोरम है। बौद्धिक संपदा के साथ

प्रोफेशनल्स में कार्यजा शक्ति, कार्य कुशलता वाली शक्ति भी हो सकती है, उसका अच्छा उपयोग होना चाहिए। समाज की अन्य संस्थाओं को भी कहीं प्रोफेशनल की अपेक्षा पड़े तो इस फोरम से संपर्क किया जा सकता है कि हमें इस क्षेत्र का व्यक्ति चाहिए। फोरम से वैसा व्यक्ति मिल भी सकता है, जो अन्य संस्थाओं की समस्याओं के समाधान तथा कार्य में सहयोगी बने।

इस फोरम के सदस्य जैन विद्या आदि के क्षेत्र में भी यथासंभव आगे बढ़ने का प्रयास करें, अपने व्यक्तिगत जीवन को अच्छा रखें। देव, गुरु और धर्म के प्रति आस्था रहे। अपनी जीवन की गुणवत्ता को भी बढ़ाने का प्रयास रखें कि हमारे जीवन में नैतिकता का प्रभाव रहे। व्यवहार में शांति रहे, ज्यादा गुस्सा नहीं आना चाहिए। बौद्धिकता के साथ आदमी की प्रकृति शांत रहनी चाहिए। ज्यादा गुस्सा न आए तो काम और ज्यादा अच्छा हो सकता है। दिमाग में ज्यादा तनाव, गुस्सा, आवेश रहेगा तो कार्य में बाधा पैदा हो सकती है। बुद्धि को सुरक्षित रखने के लिए भी दिमाग में शांति रहनी चाहिए, तनाव में ज्यादा नहीं जाना चाहिए। आदमी कार्य में भले व्यस्त रहे, पर दिमाग को अस्त-व्यस्त नहीं करना चाहिए। गुस्सा आए, ज्यादा तनाव हो, संतुलन न रहे, मानसिक धैर्य न रहे तो आदमी का दिमाग अस्त-व्यस्त हो सकता है। दिमाग का अस्त-व्यस्त होना आदमी के जीवन की हार है। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्य जो आमतौर से बौद्धिक संपदा से संपन्न माने जा सकते हैं, उनकी ऊर्जा पवित्र, धार्मिक, निरवद्य और कल्याणकारी कार्यों में लगे, यह फोरम खूब अच्छा कार्य करे, शुभाशंसा।'

पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का उद्‌बोधन हुआ। पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त साध्वीवर्याजी और मुख्यमुनिश्री ने प्रोफेशनल फोरम के सदस्यों सहित समुपस्थित जनता को उत्प्रेरित किया। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीशकुमारजी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू, न्यासी श्री संजय जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आमेट से समागत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री हस्तीमल हिरण ने अपने आस्थासिक्त विचार व्यक्त किए। श्री नवीन नौलखा ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी सीडी 'मेरे गुरु महाश्रमण' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित करते हुए गीत को प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में समायोजित तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की १०वीं द्विदिवसीय 'नेशनल कॉन्फ्रेंस' में करीब ४०५ प्रोफेशनल्स संभागी बने। संभागियों को मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि रजनीशकुमारजी तथा मुनि सत्यकुमारजी से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। विभिन्न सत्रों में लॉयन एपी सिंह, टीपीएफ के मुख्य न्यासी श्री संजय धारीवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू, निवर्तमान अध्यक्ष श्री सलिल लोढ़ा, पूर्व अध्यक्ष श्री नरेन्द्र श्यामसुखा, महामंत्री श्री नवीन पारख, श्री अमिताभ मुखर्जी, मेघा जैन, श्री शेखर मेहता, श्री सुनील सेठिया, श्री विक्रम सेठिया, कोषाध्यक्ष श्री विक्रम चण्डालिया, ट्रस्टी एवं कॉन्फ्रेंस संयोजक श्री संजय जैन, उपाध्यक्ष श्री पंकज ओस्तवाल, श्री सुनील भंसाली, डॉ. कमलेश नाहर, ऋतु चोरड़िया, श्री बलवंत चोरड़िया, सहमंत्री श्री मनोज नाहटा, श्री नवीन सुराणा, कोलकाता सेन्ट्रल शाखा के अध्यक्ष श्री गणेश बैद, साउथ कोलकाता शाखा के अध्यक्ष श्री जयचंदलाल मालू, उत्तर हावड़ा शाखा के अध्यक्ष श्री राकेश सिंघी, दक्षिण हावड़ा शाखा के अध्यक्ष श्री गौतम दुगड़ और पूर्वांचल शाखा के अध्यक्ष श्री सुशील चौपड़ा के वक्तव्य हुए।

कॉन्फ्रेंस के दौरान सन् २०१६ व २०१७ का टीपीएफ गौरव सम्मान क्रमशः एनके दुगड़ (दिल्ली), तथा इन्कमटेक्स के चीफ प्रिंसिपल कमिश्नर श्री केसी जैन (दिल्ली) को देने की घोषणा भी की गई। बेस्ट ब्रांच के रूप में कोलकाता, बैंगलुरु तथा सिलीगुड़ी शाखा को चुना गया।

२१५वें भिक्षु चरमोत्सव का समायोजन

४ सितम्बर। भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता परम पूज्य महामना आचार्य भिक्षु का २१५वां चरमोत्सव। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्य भिक्षु एक महान गुरु थे। वे सिद्धान्त और आचरण व कथनी और करणी की एकता को महत्त्व देते थे। वे व्यक्तिगत आलोचना से दूर रहते थे। उनकी युक्तियुक्त बातें प्रेरणास्पद हैं। वे व्यवहार निपुण व्यक्तित्व थे। प्रतिकूलताओं में भी भव्य जीवों के उद्धार के लिए वे प्रयत्नशील रहते थे। उन्होंने सत्य के लिए अपने गुरु को ही नहीं, अपने सुख का परित्याग कर दिया। वे समता और क्षमा के परम साधक थे। उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरक है। ऐसे महान गुरु को हम सभी श्रद्धा के साथ नमन करते हैं। मुख्यमुनिश्री ने 'स्वामी भीखणजी रो नाम आठूं याम ध्यावां' गीत का संगान किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व विशिष्ट और विलक्षण था। उनकी साधना विशिष्ट थी। उन्होंने दुनिया को नया रास्ता दिखाया, इसी कारण आज भी वे जन-जन के लिए स्मरणीय बने हुए हैं। वे जिस राह पर चले, वह कांटों और अंधियारे भरी थी, बीहड़ थी, किन्तु वे उस पर चले तो वह पथ राजपथ बन गया। उन्होंने धर्मक्रांति की, इसके कारण उन्हें अपने जीवन में कितनी-कितनी दुविधाएं भोगनी पड़ीं, कितना-कितना सहना पड़ा, उसकी कल्पना मात्र से मन रोमांचित हो उठता है।

आचार्य भिक्षु जिनवाणी पर समर्पित थे। दसवेआलियं के दसवें अध्ययन में भिक्षु को व्याख्यायित किया गया है, उसके आलोक में हम आचार्य भिक्षु को देखें तो पाएंगे कि वे उसकी कसौटियों पर शत-प्रतिशत खरे उतरते हैं। प्रतिकूलताओं और संघर्षों में वे विचलित नहीं हुए। लक्ष्य प्राप्ति के लिए उन्होंने अपनी सुख-सुविधाओं को त्याग दिया और अपने मन, वचन और काय इन तीनों योगों को संयम के लिए समर्पित कर दिया। उनकी आत्मा ज्ञान, दर्शन और चारित्र में स्थित थी। उनकी जीवन गाथा असीम है। उसे शब्दों से बताया नहीं जा सकता। उनके चरमोत्सव पर आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में हम सब यह कामना करें कि आचार्य भिक्षु की आगम निष्ठा, कष्ट सहिष्णुता और लक्ष्य के प्रति समर्पण भाव चतुर्विध धर्मसंघ में संक्रान्त हो। उनके प्रति अंतहीन विनत श्रद्धांजलि।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आचार्य भिक्षु एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे, जिनमें विशेष समर्पण का भाव था। वे बौद्धिक संपदा से विशिष्टतया सम्पन्न थे, ऐसा प्रतीत होता है। उनमें प्रतिभा, मेधा थी। उन्होंने अपने गुरु की सन्निधि में स्वाध्याय किया। प्रतिभावान यथार्थनिष्ठ व्यक्ति के लिए असंगत बात की हां भरना मुश्किल होता है। ज्ञान की चर्चा में तर्क होना चाहिए। ज्ञान की चर्चा में सर्वत्र हां में हां मिलाना अपेक्षित नहीं होता। जब चर्चा हो रही हो, तब अपनी बात तर्क के साथ रखनी चाहिए, पर आज्ञा में सतर्क रहना चाहिए। जहां गुरु की आज्ञा हो गई, वहां तर्क से बचना चाहिए। ज्ञान में तर्क और आज्ञा में सतर्क। आचार्य भिक्षु स्थानकवासी परंपरा में थे। अपनी तार्किकता और मेधा के कारण उनके लिए ज्ञान के संदर्भ में अनपेक्षित हां में हां मिलाना संभवतः कठिन था। हर बौद्धिक आदमी में वह क्षमता नहीं होती, जो बुद्धि संपन्न और शुद्धि संपन्न व्यक्ति में होती है। बौद्धिक आदमी अपनी बुद्धि का उपयोग झूठ बोलने में भी कर सकता है। झूठ बात को सही साबित करने का प्रयास भी कर सकता है। इसलिए कोरी बौद्धिकता कोई बड़ी बात नहीं है।

आचार्य भिक्षु २१४ वर्ष पूर्व आज के दिन महाप्रयाण कर गए, किन्तु उनका पंथ आज भी चल रहा है, यह विशेष बात है। व्यक्ति चला गया, पर पंथ अभी भी चल रहा है, आगे बढ़ रहा है। आचार्य भिक्षु के जीवनकाल के बाद भी उनके द्वारा संप्रवर्तित धर्मसंघ चल रहा है और इस पंथ पर चलने वाले पथिक चल रहे हैं। उन्होंने हमें जो पंथ दिखाया, वह व्यवस्था की दृष्टि से मानों राजपथ बन गया है। आचार्य भिक्षु ने तो कितनी कठिनाईयां भोगी होंगी। जयाचार्य से पहले या जयाचार्य तक भी कितनी कुछ कठिनाइयां व्यवस्था के पक्ष में रही होंगी, पर गुरुओं की कृपा मानें या जो भी, आज कितना सुन्दर और सीधा-सपाट मार्ग बना हुआ है। आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ के रूप में एक पंथ प्रस्तुत किया। उत्तरवर्ती आचार्यों ने उस पथ पर स्वयं गमन किया तथा औरों को भी उस पर गमन करने में सहयोग दिया।

तेरापंथ के सिद्धान्तों के बारे में जानने वालों में एक नाम श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' का लिया जा सकता है। तेरापंथ दर्शन के विशेषज्ञ और तेरापंथ दर्शन को समझा सकने वाले के रूप में उनका नाम लिया जा सकता है। साध्वीप्रमुखाजी का भी अपना विभिन्न विषयों का अध्ययन है। आप में साहित्यिक प्रतिभा भी है, लेखन का भी सामर्थ्य है, शास्त्रीय संपर्क में भी काफी रहे हुए हैं। स्वाध्याय भी चलता है। तेरापंथ के सिद्धान्तों, तेरापंथ के इतिहास, गुरुदेव तुलसी के संदर्भ में आपका वैदुष्य है, अच्छा ज्ञान है। संघीय गतिविधियों, प्रशासन, सिद्धान्तों, लेखन आदि से भी आपका संपर्क रहा है। भगवती जोड़ जैसे ग्रंथों से सम्पर्क रहा है। आपका अपना बाहुश्रुत्य है। आपमें अवस्था की दृष्टि से भी प्रौढ़ता है, उच्चता है और ज्ञान व चारित्र पर्याय की दृष्टि से भी प्रौढ़ता है। चारित्रात्माएं अपनी प्रतिभा के साथ स्वामीजी के ग्रंथों का कुछ गहराई के साथ अध्ययन कर उनके सिद्धान्तों के वेत्ता और वक्ता बनने का प्रयास करें, यह काम्य है।

साधु-साध्वियों में गुरुकुलवास में कुछ अच्छी प्रतिभाएं हैं। जिनमें ज्ञान है, वे अपनी प्रतिभा का प्रयोग कर विकास करते हुए एक दिशा में लगकर अपनी मेधा की अच्छी उपयोगिता को सिद्ध कर सकते हैं। साध्वियों में कई साध्वियां अच्छी प्रतिभाशाली हैं, उनमें स्फुरणा भी है, तात्त्विक रूचि भी है, आगम के संपर्क में रहने वाली हैं। कई संत भी तात्त्विक और आगमिक ज्ञान से संपन्न हैं। उनमें मेधा है, प्रतिभा है। आज भी उनमें वैदुष्य है तथा वे और विकास करें तो और आगे बढ़ सकते हैं। हमारे छोटे-छोटे संतों में भी प्रतिभा है। उसके द्वारा वे अच्छा विकास करें, यह वांछनीय है। नई पीढ़ी ज्ञान में और आगे बढ़े, ज्ञान में अच्छा अध्यवसाय रहे और व्यवस्थित अध्ययन चले। उसमें आगमों और संस्कृत का ज्ञान बढ़े और चिंतन स्फुरणा भी विकसित हो।

आज भी मुझे लगता है कि हमारे साधु-साध्वियों में अच्छी प्रतिभा है, ज्ञान भी है और वह ज्ञान और बढ़ सके, इस दिशा में प्रयास होते रहना चाहिए। हमारी ज्ञान की पंरपरा आगे से आगे चलती रहे। साधु, साध्वियों और समणियों में कम से कम दस-दस प्रतिशत व्यक्तियों का ज्ञान उच्च कोटि का रहे, वे ज्ञान, ज्ञान की दृष्टि से अग्रिम पंक्ति में रहे तो अच्छी बात है। कई समणियों में संस्कृत और जैन दर्शन का अच्छा ज्ञान है। उनका ज्ञान और आगे बढ़े, विश्वविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन करने वाली तथा विशेष अध्ययन करने वाली समणियों का ज्ञान और विकसित हो तथा उनके ज्ञान का अच्छा उपयोग भी होता रहे तो धर्मसंघ के लिए अच्छी बात हो सकती है।

आज आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण दिवस है। हम उनके प्रति, उनकी साधना के प्रति और उनकी गौरव गाथा के प्रति और कुल मिलाकर कह दें कि याथार्थ्य के प्रति श्रद्धाभाव रखें, यह अभिलषणीय है।'

आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर स्वरचित गीत का संगान किया। वह इसी अंक के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित है।

पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त मुनिवृंद ने सामूहिक रूप में गीत की प्रस्तुति दी। कोलकाता की विभिन्न तेरापंथ युवक परिषदों के युवकों ने गीत प्रस्तुत किया। संघगान के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

२१५वें भिक्षु चरमोत्सव पर विराट धम्म जागरण

२१५वें भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष्य में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज रात्रि में विशाल धम्म जागरणा का समायोजन हुआ। रात्रि करीब सवा सात बजे से सवा बारह बजे तक आयोजित इस कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने करीब सवा घंटे तक अपनी मंगल सन्निधि प्रदान की। पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया, श्रीमती मीनाक्षी भूतोड़िया, बालक ऋषि दुगड़, श्री अमित सिंघवी, डाकलिया बंधु तथा सप्त मंडल ने पृथक-पृथक गीतों की प्रस्तुति के द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के प्रति अपना निष्ठाभाव तथा आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धाभाव अभिव्यक्त किया। कोलकाता प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कमल दुगड़ ने आगंतुकों के स्वागत में अभिव्यक्ति दी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने स्वरचित गीत 'तेरापथ अधिराज भिक्षु स्वामी पधारो जी' का संगान किया।

कार्यक्रम के दूसरे दौर में पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में प्रस्तुति देने वाले मुख्य संगायकों के साथ सरदार मनमोहन सिंह, श्री नवीन नौलखा, श्री ललित बोरड़, श्री रणजीत सेठिया, अर्हम् मंडल, महावीर मंडल तथा प्रज्ञा भजन मंडली ने भी प्रस्तुतियां दीं। मुनि दिनेशकुमारजी ने गीत के द्वारा आचार्य भिक्षु के प्रति प्रणति अर्पित की। संगायकों की प्रस्तुतियों से ऐसा समां बंधा कि मध्य रात्रि तक भी लोग सोत्साह उपस्थित रहे। 'वन्स मोर' और ऊँ अर्हम्' की तुमुल ध्वनि तथा भक्ति में डोलते मस्तक श्रद्धालुओं के आन्तरिक आनंद को दर्शा रहे थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

कार्यक्रम में जनता की उपस्थिति बारह हजार से अधिक आंकी गई। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल पर किया गया, जिससे देश-विदेश में स्थित हजारों-हजारों श्रद्धालु भी लाभान्वित हुए।

आज भूटान के पूर्व लोकसभाध्यक्ष श्री दाशो पसंग दोर्जे ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। गत माह भारतीय सेना के कोलकाता हेडक्वार्टर जोन के डायरेक्टर स्टेट्स कर्नल प्रियदर्शी, इन्कमटेक्स कमिश्नर श्री राकेश गोयल, उड़ीसा पुलिस के आईजी श्री अरुण बोथरा तथा पश्चिम बंगाल डब्ल्यू.एस.एस.ओ. पब्लिक हेल्थ इंजिनियरिंग विभाग की मुख्य सलाहकार श्रीमती इन्दिरा चक्रवर्ती ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की।

आत्मा को मलिन बनाता है रौद्र ध्यान

५ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'ध्यान के चार प्रकारों में दूसरा है-रौद्रध्यान। जिसका चित्त निष्ठुर होता है, वह रुद्र होता है। रुद्र व्यक्ति की रौद्रता के संदर्भ में होने वाली एकाग्रता रौद्र ध्यान कहलाता है। रौद्र ध्यान का पहला प्रकार है--हिंसानुबंधी रौद्र ध्यान। जिस आदमी के मन में हिंसा के प्रति एकाग्रता बनी रहती है, वह हिंसानुबंधी रौद्र ध्यान वाला व्यक्ति है। आतंकवाद संभवतः रौद्र ध्यान के प्रथम प्रकार का उदाहरण है। छिपकली में जीवों के प्रति जो एकाग्रता होती है, वह भी संभवतः हिंसानुबंधी रौद्र ध्यान है।

रौद्र ध्यान का दूसरा प्रकार है--मृषानुबंधी। झूठ बोलने में जो एकाग्रता होती है, वह मृषानुबंधी रौद्र

ध्यान है। मृषा का मार्ग टेढ़ा-मेड़ा होता है, जबकि सत्य का रास्ता सीधा-सपाट है।

रौद्र ध्यान का तीसरा प्रकार है--स्तैन्यान्यानुबंधी। चोरी के संदर्भ में जो एकाग्रता होती है, वह स्तैन्यान्यानुबंधी रौद्र ध्यान है।

रौद्र ध्यान का चौथा प्रकार है--संरक्षणानुबंधी। पदार्थों व विषयों के संरक्षण में होने वाली एकाग्रता रौद्र ध्यान का चौथा प्रकार है। साधु को तो अल्पोपाधि होना चाहिए। अनावश्यक वस्तुओं को इकट्ठा नहीं करना चाहिए। विहार में अनपेक्षित पुट्ठे नहीं रहने चाहिए। साधन अपवाद होता है, वह अनावश्यक संग्रह का साधन न बने। गृहस्थ भी अपरिग्रह की दिशा में जितना आगे बढ़ सके, अच्छा है।

रौद्र ध्यान से बचने के लिए आदमी को त्याग करना चाहिए। त्याग की चेतना रहेगी तो रौद्र ध्यान से बचाव हो सकता है। साधु के हिंसा, झूठ, चोरी और परिग्रह का त्याग होता है, इसलिए उसके विपरीत ध्यान से बचना काफी आसान हो जाता है। गृहस्थ को भी हिंसा-झूठ, चोरी और परिग्रह का सीमाकरण करना चाहिए। छोटा-सा तंदुल मत्स्य रौद्र ध्यान के कारण नरक में चला जाता है। रौद्र ध्यान आत्मा को मलिन बनाने वाला तत्त्व है।'

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में साधु-साध्वियों की समुपस्थिति में हाजरी का वाचन किया। हाजरी वाचन के उपरान्त साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चारित किया। जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री हीरालाल मालू ने फाउंडेशन की गतिविधियों की अवगति दी। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का उद्‌बोधन हुआ।

कुण बेटो, कुण बाप

६ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'अनुप्रेक्षा एक साधना का प्रयोग है। प्रेक्षाध्यान में विभिन्न अनुप्रेक्षाओं का उल्लेख है। अनुप्रेक्षा से चित्त की निर्मलता का विकास हो सकता है। धर्मध्यान की चार अनुप्रेक्षाएं बताई गईं हैं। उनमें पहली है-एकत्व अनुप्रेक्षा। निश्चयतः मनुष्य अपने आप में अकेला है। दूसरों का सहयोग मिलता है, वह दूसरों को सहयोग देता है, साथ में रहता है, इन सबके बावजूद आदमी अकेला है। वह अकेला उत्पन्न होता है, वह अकेला ही कर्म करता है और अकेला ही उसे भोगता है। एक भूमिका में अकेलेपन की साधना का प्रयोग भी होता है। हालांकि वर्तमान में अकेले साधना करना कुछ खतरों से युक्त हो सकती है। मनुष्य अपने कर्मों का भागीदार वह स्वयं होता है। 'कुण बेटो, कुण बाप, करणी आपो आप' आदमी यह चिन्तन करे कि मैं अकेला हूं, इसलिए किसी से मोह और आसक्ति क्यों करूं। एकत्व की अनुप्रेक्षा अहं को कृश या क्षीण करने वाली हो सकती है।'

आवश्यक निर्युक्ति-खण्ड-२ का लोकार्पण

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में आज आवश्यक निर्युक्ति खड-२ के लोकार्पण का उपक्रम रहा। इस संदर्भ में ग्रंथ की संपादक/अनुवादक समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए। प्रो. फूलचंद जैन 'प्रेमी' ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने कहा--'आचार्य भद्रबाहु प्रणीत 'आवश्यक निर्युक्ति खण्ड-२' बहुत सुन्दर ग्रंथ लग रहा है। संपादन भी बहुत अच्छा हुआ प्रतीत हो रहा है। कोई मन लगाकर ऐसे ग्रंथों का स्वाध्याय करे, अध्ययन करे तो अच्छी खुराक मिल सकती है। कार्य करने वालों के श्रम से कितनों को लाभ

मिल जाता है। काम करने वाले कोई-कोई होते हैं और लाभ उठाने वाले कितने हो सकते हैं, किन्तु कोई-कोई व्यक्ति ऐसे ग्रंथों का मन लगाकर अध्यवसायपूर्वक स्वाध्याय करता होगा। यह आवश्यक नियुक्ति खंड-२ प्रकाशित हुआ है। इसे बहुत अच्छा ग्रंथ माना जा सकता है। समणी कुसुमप्रज्ञाजी का परिश्रम इसमें सन्निहित है। इसमें हिन्दी अनुवाद भी है, इसलिए इसे गृहस्थ लोग भी पढ़ सकते हैं। एक अच्छा ग्रंथ प्रकाशित होकर आ गया है।'

पूज्यप्रवर के समक्ष जैन विश्वभारती के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द बोहरा आदि ने आवश्यक निर्युक्ति खण्ड-२ तथा आचार्यप्रवर की कृति 'क्या कहता है जैन वाङ्मय' के बंग्ला अनुवाद का लोकार्पण किया।

जीवनविज्ञान का नवीन संशोधित पाठ्यक्रम जीवन-विज्ञान एकेडमी, जैन विश्वभारती द्वारा पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया गया। इस संदर्भ में जीवन विज्ञान एकेडमी के विभागाध्यक्ष श्री गौतम सेठिया ने अभिव्यक्ति दी।

आज जैन विश्वभारती के अधिवेशन का उपक्रम रहा। कार्यक्रम में इस संदर्भ में जैन विश्वभारती के अध्यक्ष श्री रमेशचंद बोहरा तथा मंत्री श्री राजेश कोठारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। जैन विश्वभारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'जैन विश्वभारती के द्वारा मानों ज्ञान का आराधन चलता रहता है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के कार्यकाल की एक सुंदर उपलब्धि है जैन विश्वभारती। आचार्य महाप्रज्ञजी का जिसे पथदर्शन मिला। जैन विश्वभारती एक गरिमापूर्ण संस्था है, जिसके द्वारा कितनी-कितनी गतिविधियां चलाई जा रही हैं। जैन विश्वभारती का परिसर भी बड़ा रमणीय है, जहां सुबह-सुबह घूमने का मन हो जाए। गुरुदेव तुलसी जैन विश्वभारती में प्रातःकाल भ्रमण करते थे। जैन विश्वभारती एक सेवा देने वाली संस्था है, जैन विद्या को पोषण देने वाली संस्था है। जीवनविज्ञान, प्रेक्षाध्यान अनेक-अनेक गतिविधियां उससे जुड़ी हुई हैं। आज जैन विश्वभारती की वार्षिक संगोष्ठी का दिन है। जैन विश्वभारती के कार्यकर्ता जो इस संस्था की सेवा कर रहे हैं और इस संस्था के माध्यम से जनता की सेवा और साथ ही ज्ञानयज्ञ की आयोजना कर रहे हैं। जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय भी साथ में जुड़ा हुआ है। यह संस्था खूब अच्छा आध्यात्मिक, धार्मिक विकास करती रहे, खूब अच्छी पवित्र सेवा करती रहे, मंगलकामना।'

आज सीमा सुरक्षा बल के डीआइजी श्री समीर मिश्रा ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

अनित्य अनुप्रेक्षा से कृश होता है मोह

७ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में नित्यता भी है और अनित्यता भी है। जितने परमाणु अनंतकाल पहले थे, उतने ही आज हैं और उतने ही अनंतकाल तक रहेंगे। तीन शब्द हैं--उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य। पदार्थ उत्पन्न होते हैं, नष्ट होते हैं और स्थायी रहते हैं। दो नय हैं--द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक। द्रव्यार्थिक नय में शाश्वत दृष्टिकोण की प्रधानता रहती है और पर्यायार्थिक नय में अनित्यता की प्रधानता रहती है। आत्मा स्थायी है, यह नित्य है, किन्तु वह विभिन्न शरीरों को धारण करती रहती है, उसमें पर्याय परिवर्तन होता रहता है, इस दृष्टि से वह अनित्य भी है।

अनित्य अनुप्रेक्षा से मोह का भाव कमजोर पड़ता है, इसलिए आदमी को अनित्य अनुप्रेक्षा का प्रयोग करना चाहिए। अनित्य अनुप्रेक्षा में संसार की अनित्यता का चिन्तन किया जाता है। पैसा, वस्त्र आदि पदार्थ

भी अनित्य हैं, उनके प्रति भी ज्यादा आसक्ति-मूर्च्छा नहीं करनी चाहिए।

पूज्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान श्रृंखला के अंतर्गत कटट्रता और अकटट्रता दोनों को सापेक्ष रूप में उपयोगी बताया। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी तथा पूज्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात् साध्वीवर्याजी का वक्तव्य हुआ।

राजस्थान के प्रशासनिक सेवा से जुड़े हुए श्री लोकेश सहल ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे बार-बार आपकी सेवा का अवसर मिला है। वर्ष २०१० में मैं जब सरदारशहर में उपखंड अधिकारी था उस समय मुझे आचार्य महाप्रज्ञजी और आचार्य महाश्रमणजी दोनों का सान्निध्य मिला। उस समय मैं ऐतिहासिक पलों का भी साक्षी बना, वह मेरे जीवन का अद्भुत अवसर था। इस सान्निध्य में जीवन को एक दिशा मिली। आपके प्रवचन से स्वस्थ और प्रशस्त जीवन के सूत्र सहज शब्दों में मिल जाते हैं। आपकी दो दिनों की सेवा में मुझे जीवन की अमूल्य निधि प्राप्त हुई है। इसलिए मैं आचार्यश्री से यह आशीर्वाद चाहता हूं कि आपकी सेवा का अवसर मुझे बार-बार मिलता रहे।'

पूज्यप्रवर ने श्री सहल को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'जो भी कार्य करें, नैतिकता उसके साथ जुड़ी रहे।'

प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित तथा श्रीमती कुसुम लूनिया द्वारा लिखित 'सीक्रेट्स ऑफ हेल्थ' का लोकार्पण पूज्यप्रवर के समक्ष किया गया।

पूज्य सन्निधि में नमस्कार महामंत्र का कोटि जप अनुष्ठान

परम पूज्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार अगस्त माह में कोलकाता में नमस्कार महामंत्र के कोटि जप अनुष्ठान का उपक्रम रहा। इस अनुष्ठान में ७७३ व्यक्तियों के संभागी बनने तथा उनके द्वारा निश्चित कालावधि में कुल २,७५,४६,७२० बार नमस्कार महामंत्र के जप करने की सूचना प्राप्त हुई है। १ अगस्त से ३० अगस्त तक चले इस अनुष्ठान में एक संभागी व्यक्ति द्वारा एक दिन में अधिकतम तीन बार में ग्यारह माला फेरने की विधि निर्धारित की गई थी। इस अनुष्ठान के साथ पालनीय नियम इस प्रकार रहे--

- साधना काल में कुछ तप का प्रयोग, यथा : एकासन अथवा उपवास अथवा प्रतिदिन ११ द्रव्य की सीमा (पानी, मंजन, दवाई के सिवाय) अथवा आयम्बिल।
- नशामुक्ति, यथा : शराब, धूम्रपान, गुटखा आदि वर्जन।
- जमीकंद वर्जन : आलू, प्याज, लहसुन, गाजर, मूली, शकरकंद
- रात्रि भोजन वर्जन : (तिविहार अथवा चौविहार)
- ब्रह्मचर्य व्रत का पालन : (संपूर्ण अनुष्ठान काल तक)

पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार अनुष्ठान के संचालन में मुनि जयकुमारजी का श्रम रहा।

स्मारणा

- संघीय संस्थाओं के अतिरिक्त तेरापंथ के नाम से किसी संस्था या संगठन का गठन करने से पूर्व महासभा से स्वीकृति प्राप्त करना अनिवार्य है।
- तेरापंथ व तेरापंथ-आचार्यों के नाम से स्थायी व व्यापक योजना या पुरस्कार का प्रारंभ नए सिरे से केन्द्रीय संस्थाओं के अतिरिक्त किसी भी संघीय संस्था के द्वारा नहीं किया जाए।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- चिकित्सालय या उसमें संचालित किसी भी (एक्सरे, डायलिसिस आदि) चिकित्सा संबंधी उपक्रम के साथ तेरापंथ व तेरापंथ-आचार्यों का नाम जोड़ा जाए तो आपत्ति नहीं, किन्तु तेरापंथ व तेरापंथ-आचार्यों के नाम के साथ किसी गृहस्थ का नाम न जोड़ा जाए।
- गौशाला, प्याऊ के साथ तेरापंथ व तेरापंथ-आचार्यों का नाम न जोड़ा जाए।

(श्रावक संदेशिका धारा-२३, ५७-५९)

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- कल्याणमित्र स्व. श्री बच्छराजजी सेठिया (जोधपुर-जयपुर-कोलकाता-बालूरघाट) की पुण्य स्मृति में श्री निर्मल, आलोक, नीरज, पंकज, सिद्धार्थ सेठिया परिवार द्वारा प्रदत्त।

५१००/- स्व. छगनराजजी पालगोता (टापरा) के सफल संथारे के उपलक्ष्य में प्रेमराज, कनकराज, भरतकुमार, महेन्द्रकुमार, किशोरकुमार, विजयकुमार, निकील समस्त पालगोता परिवार बालोतरा, अहमदाबाद, हुबली द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्री शंकरलालजी बोलिया 'बा' (खरनोटा-सूरत) की पुण्य स्मृति में श्रीमती सुन्दरदेवी शंकरलालजी बोलिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री पुष्पलालजी गेलड़ा (शहादा) की प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चंद्रकला, सुपुत्र व पुत्रवधू ऋषभ-लक्ष्मी, वर्धमान-माला, श्रेयांस-रूपाली, सुपौत्र शासन, सुपौत्री श्रद्धा, क्षमा, श्रेणी, श्रेया, सिद्धि, भवि गेलड़ा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती चंद्राबाई बम्बोली (धर्मपत्नी श्री भंवरलालजी बम्बोली, हैदराबाद) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू राकेश-राजश्री, धर्मेश-सुनीता बम्बोली द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती मांगीदेवी बाफना (धर्मपत्नी स्व. श्री पुखराजजी बाफना, सोजतरोड) को तपोनिष्ठ श्राविका संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में हेमराज-सुमित्रा, अरिहंत-भानू, अरिष्ट, रिधांश सुन्देचा पाली द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री धर्मचंद-पुष्पा धाड़ेवा (श्रीडूंगरगढ़-कोलकाता) के जन्मदिवस (५ अगस्त) के अवसर पर सिपधा (नीदरलैंड) व चेतना जैन द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-०७३८४४३६५७२, ०९७८४४०७४६१
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ९३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी